विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा – षष्ठ दिनांक -०२-०८ - २०२१

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक -पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज कारक के बारे में पुनः अध्ययन करेंगे।

यण सन्धि:

जब ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ, लू से परे कोई भिन्न स्वर हो, तो उसके स्थान पर क्रम से यू, व्, र् तथा ल् हो जाता है; जैसे

इति + आदि = इत्यादि (इ का य् हो गया)

सु + आगतम् = स्वागतम् (उ का व् हो गया)

लू + आकृति = लाकृति (लू का ल हो गया)

पितृ । अनुमति = पित्रनुमति (ऋ का र् हो गया)

5. अयादि सन्धि:

यदि ए, ऐ, ओ, औ से परे कोई स्वर आए, तो इनके स्थान पर क्रम से अय् आय्, अव् हो जाता है, जैसे

ने + अन = नयन (ए का अय् हो गया)

गै + अक = गायक (ऐ का आय् हो गया)

पो + इत्र = पवित्र (ओ का अव् हो गया)

नौ + इक = नाविक (ओ का आव हो गया)

व्यंजन सन्धि

व्यंजन सन्धि:

जब किसी व्यंजन के साथ किसी स्वर या व्यंजन का मेल हो, तो वह व्यंजन सन्धि' कहलाती है।

व्यंजन सन्धि के प्रमुख नियम इस प्रकार हैं

नियम 1:

यदि किसी वर्ग के प्रथम या तृतीय वर्ण से परे अनुनासिक वर्ण रहे, तो वह निज वर्ण का अनुनासिक होकर अगले वर्ण से मिल जाता है; जैसे

जगत् + नाथ = जगन्नाथ, उत् + मत्त = उन्मत्त।

नियम 2:

क, च, ट, त, प से परे किसी भी वर्ग का तीसरा या चौथा व्यंजन) अथवा स्वर आए, तो क, चे, ट, त, प का क्रमशः गे, ज, ड, द, ब हो जाता है; जैसे- सत् + आचार = सदाचार

जगत् + ईश = जगदीश

दिक् + गज = दिग्गज